10 ऐसे विमल भाव जब पावैं.....

ऐसे विमल भाव जब पावैं,
तब हम नर भव सफल कहावे ।।

दरश बोध मय निज आतम लखि, परद्रव्यनि को नहिं अपनावै ।
मोह राग रुष अहित जान तजि, झटति दूर तिनको छिटकावै ।।

ऐसे विमल भाव जव पावैं....

कर्म शुभाशुभ बंध उदय में, हर्ष विषाद चित्त नहिं लावैं ।
निज हित हेतु विराग ज्ञान लखि, तिनसों अधिक प्रीति उपजावैं ।।

ऐसे विमल भाव जव पावैं....

विषय चाह तजि, आत्म वीर्य सजि, दुख दायक विधि बंध खिरावैं ।
'भागचन्द' शिव सुख सब सुखमय,आकुलता विन लखि चित चावै ।।

ऐसे विमल भाव जब पावें ।।
तब हम नरभव सफल कहावें ।।

जब ऐसे शुद्ध अर्थात निज परिणतिमय भावों की हम प्राप्ति करेंगे तब ही नर भव की प्राप्ति सफल कही जायेगी ।।टेक ।।

जब हम दर्शन–ज्ञान मयी निज आत्मा को ध्याकर परद्रव्य में अपनत्व नही करेंगे और मोह–राग–द्वेष को अहित जानकर, उनका शीघ्र ही त्याग कर देंगे, तब नरभव की सार्थकता होगी ।।१।।

जब हम शुभाशुभ कर्मों के उदय में इष्ट–अनिष्टपना मन में नही लायेंगे अर्थात उन्हें इष्ट–अनिष्ट नहीं जानेंगे और आत्महित में अनुकूल वीतराग–विज्ञानमय स्वभाव का ही ज्ञान करेंगे और उसी में अपनी प्रीति बढा येंगे, तब नरभव की सार्थकता होगी।।२।।

कविवर भागचंद जी कहते हैं कि जब हम विषय भोग की इच्छा का त्याग करके आत्मवीर्य अर्थात आत्मबल द्वारा दुखदायक बंध विधि का नाश करेंगे और अनंत एवं पूर्ण निराकुल सुखमय मोक्षावस्था को प्राप्त करने की चित्त में अभिलाषा रखेंगे तब ही यह नरजन्म सफल माना जायेगा ।।३।।